ब्रह्माण्ड, प थ्वी का भूगोल, सूर्य एवं उनकी परिचर्या तथा योग का वर्णन है। यह लघु रचना है।

मुद्‌गल पुराण

मुद्‌गल पुराण अभी अप्रकाशित है और इसमें गणपति या गणेश का वर्णन है। इसमें गणपति का गणेश के नौ अवतारों का विवरण प्राप्त हुआ है-वक्रतुण्ड एकदन्त, महोदर, गजानन, लम्बोदर, विकट, विघ्नराज, धूम्रवर्ण एवं योग। यह तांत्रिक उपासना से प्रभावित है और गणपति के बत्तीस प्रकारों का विवेचन प्रस्तुत करता है। अनुमानतः इस उपपुराण की रचना ६०० ई० से ११०० ई० के आसपास हुई है।

कल्कि पुराण

कल्कि पुराण में कलियुग में विष्णु के अवतार कल्कि का वर्णन है। यह पुराण कलकत्ता से प्रकाशित हो चुका है।

कालिका पुराण

कालिका पुराण का प्रकाशन चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी से १९७२ ई० में हुआ है। इसमें काली के अनेक रूप धारण करने का वर्णन है। इसकी रचना कामरूप या आसाम के निकट हुई थी। इसमें काली को विष्णु की माया और योगनिद्रा के रूप में दिखाया गया है जो आगे चलकर शिव की पत्नी सती के रूप में दिखाई पड़ती है। इसमें भगवती कासी एवं उनके भयंकर कर्मों का विशद विवेचन प्राप्त होता है तथा आसाम के पर्वत, नदियों एवं धार्मिक स्थानों का वर्णन मिलता है। इस पुराण की रचना दसवीं शताब्दी के आस-पास हुई थी। कामरूप या आसाम के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक इतिहास जानने के लिए यह पुराण अत्यन्त उपादेय है। इसमें नर-बलि और पशु-बलि का उल्लेख है।

नीलमत पुराण

नीलमत पुराण का प्रकाशन १९२४ ई० में लाहौर में हुआ था। इसमें काश्मीर का इतिहास, स्थानों का विवरण एवं अनुश्रुतियाँ हैं तथा राजा नील का विवरण एवं उनके मत का विवेचन है। इस पुराण का उल्लेख कल्हण रचित राजतरंगिणी में प्राप्त होता है। कल्हण ने काश्मीर का आदि इतिहास इसी से लिया है। इसका समय कल्हण से बहुत पूर्व माना जा सकता है।

पशुपति पुराण में नेपाल के राजाओं की वंशावलिंयाँ दी गयी हैं। इसके वर्ण्य विषयों में नेपाल माहात्म्य और वाग्वती-माहात्म्य है।

पुराणों के आख्यान

आख्यान शब्द का अर्थ रामायण के आख्यानों के प्रसंग में पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है। स्कन्द पुराण के अनुसार पुराण के सर्गादि प च लक्षणों के अतिरिक्त शेष जो भी विवेच्य विषय है वह आख्यान के नाम से प्रसिद्ध है-"प चाङ्‌गानि पुराणस्य चाख्यानमितरत् स्म तम्"। वस्तुतः सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित इन पाँच प्रतिपाद्य विषयों के अतिरिक्त पुराणों में आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धि इन लोकोपयोगी विषयों का संग्रह भी हुआ है।-

आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैः गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः।
पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थ विशारदः।।

इस प्रकार आख्यान, उपाख्यान और गाथायें पुराणशास्त्र का महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

आख्यानों के वैदिक स्वरूप को देखने से यह प्रायः स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक वाङ्मय में

इन्हें विकास के लिये आवश्यक अवकाश नहीं मिल सका था, तथा इनके आधार पर और इन्हीं की भाँति अनिबद्ध आख्यानों का भी समावेश कर एक प थक् साहित्य का उत्तरकाल में उद्भव और विकास नितांत संभव था। इतिहास-पुराणाभ्यां वेदं समुपब ंहयेत्' के रूप में जो पौराणिक शैली प्रचलित हुई, उसके प्राथमिक प्रयास के परिणाम में अविकसित वैदिक आख्यानों को; तथा इतिव त्तों को संकुचित रूप देने की चेष्टा की गई होगी। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसे आख्यानों के समाहार तथा तत्सम अथवा तदुद्भूत आख्यानों और उपाख्यानों के आविष्कार के कारण मौलिक पौराणिक संरचना के विकास में यथेष्ट सहायता मिली होगी। इनकी प्राथमिक विशेषता यह थी कि इन्हें पौराणिक रूप प्रदान करते समय, इनके अतीत और मौलिक तत्त्वों को ग्रहण करने के साथ-साथ नवोदित प्रव त्तियों और नवीन परिस्थितियों के अनुकूल इनमें संशोधन और परिवर्द्धन लाने की भी चेष्टा की गई थी। आख्यानों को द ष्टि में रखकर कभी-कभी पौराणिकों की अतिश्योक्तिपूर्ण शैली को आलोचना का विषय बनाया जाता है। विन्टरनित्स ने इस सम्बन्ध में पूरूरवा और उर्वशी के पौराणिक आख्यान की ओर ध्यान आकर्षित किया है। ऋग्वेद के वर्णन में पुरूरवा और उर्वशी के सहवास की अवधि चार वर्ष की मानी गई है। पर, पौराणिक वर्णन में इनके सहवास की अवधि इकसठ हजार वर्ष आख्यात है। ऐसे पौराणिक आख्यानों में दो बातें मुख्य रूप से दिखाई देती हैं। एक तो, इनके रूप को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल तथा सामान्य जन-वर्ग की प्रव त्ति के अनुसार संवारा गया है। दूसरे, पौराणिकों ने आख्यानों की परिकल्पना अथवा प्राचीन आख्यानों का विस्तार देश और काल की मानवोचित सीमा में न रखकर प्रायः अलोक-सामान्य के मापदण्ड से किया है।

वैदिक वाङ्मय सभी के लिये सुगम नहीं था, अतएव वेदोक्ति को आख्यान के माध्यम से प्रस्तुत करने के पीछे अभिप्राय था; वेद से अपरिचित लोक-समुदाय के ज्ञान को गुरुत्तर बनाना।

स्मरणीय है कि आख्यानों की लोकप्रियता इतनी अधिक थी तथा वैदिक काल से ही वे इतने महत्त्वपूर्ण समझे जाते थे कि पुराणों का अंग बनने के बाद भी उन्हें स्वतंत्र और प थक् मानने की प्रव त्ति का सर्वथा तिरोभाव नहीं हुआ था। इस प्रसंग में भी आनन्दस्वरूप गुप्त शास्त्री ने मनुस्म ति का एक श्लोक उद्ध त किया है, जिसमें स्वाध्याय (मेधातिथि की व्याख्या के अनुसार वेद), धर्मशास्त्र, आख्यान, इतिहास, पुराण और खिल (मेधातिथि के अनुसार श्रीसूक्त) का प थक्-प थक् उल्लेख हुआ है। इन्हें श्राद्ध के अवसर पर पितरों के लिए श्रवणीय बताया गया है। श्री शास्त्री की समीक्षा के अनुसार इस श्लोक से आख्यान और पुराण की प थकता स्पष्ट हो जाती है, जबकि पुराणों और पुराणेतर साक्ष्यों द्वारा आख्यान का पुराणांग में ऐसे अनेक आख्यान मिलते हैं, जो प्रारम्भ में पुराणों के अंग नहीं प्रतीत होते। पर, आगे चलकर इन्हें प्रामाणिकता एवं प्रचार के लिये पुराणों का ही अंग स्वीकार किया गया। कभी-कभी एक ही पुराण में ऐसे आख्यानों के संक्षिप्त और विस्त त, दोनों ही रूप प्राप्त होते हैं।

उक्त विवेचना से स्पष्ट है कि पुराण-संकलन की प्रक्रिया में आख्यान, एक महत्त्वपूर्ण उपादान था। संकलित होने के पूर्व पुराण, आख्यान का ही पर्याय था। इसकी सत्ता प थक् नहीं थी।

आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार पुराण के आख्यानों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-(१) धार्मिक (२) लौकिक। धार्मिक और लौकिक आख्यानों के भेद को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं कि धार्मिक आख्यानों के भीतर प्रजापति तथा विष्णु द्वारा अनेक रूपों के धारण करने की बात बहुशः वर्णित है तो लौकिक आख्यानों में किसी विशिष्ट राजा का व त्त, ऋषि का चरित्र या कोई अलौकिक लोकर जन, प्रणय कथा कहीं संक्षिप्त रूप तो कहीं विस्त त रूप में वर्णित हैं।

विद्वानों के अनुसार पौराणिक आख्यानों का मूल वेदों में है। वेदों के गम्भीर तथ्यों का पुराणकारों ने लोकर जक सरल आख्यान शैली में उपब ंहण किया है।

पुराणों में वर्णित कुछ महत्त्वपूर्ण आख्यानों का परिचय प्रस्तुत है :-

धार्मिक

(१) **मत्स्याख्यान** - यह आख्यान प्रजापति के मत्स्य रूप धारण करने से सम्बद्ध है। मत्स्य पुराण का आरम्भ तो इस आख्यान के उपब ंहण के लिए ही किया है। इसके अतिरिक्त इस आख्यान का उपब ंहण भागवत, अग्नि तथा गरुड़ पुराण में भी हुआ है। विद्वानों के अनुसार इस आख्यान का मूल शतपथ ब्राह्मण २।८।१।१ में है।

जलप्लावन के समय मत्स्य रूप प्रजापति ही मनु का संतरष्ष्व कराते हुए पुनः स ष्टि के लिए आवश्यक तत्त्वों का संरक्षण करते हैं।

(२) **कूर्माख्यान** - यह आख्यान प्रजापति के कूर्म रूप धारण करने से सम्बद्ध है। यह आख्यान कूर्म पुराण के अतिरिक्त भागवत, अग्नि, गरुड, पद्म, ब्रह्म तथा विष्णुपुराण में उपलब्ध होता है। इस आख्यान में सभी पुराण कूर्म को भगवान् विष्णु का द्वितीय अवतार मान कर विस्त त व्याख्या करते हैं। इस आख्यान का संक्षिप्त रूप तैत्तिरीय आरण्यक १।२३।३, शतपथ ब्राह्मण ७।५।१।५, तथा जैमिनीय ब्राह्मण ३।२७२ में मिलता है।

(३) **वराहाख्यान** - यह आख्यान विष्णु के वराह अवतार से सम्बद्ध है। इस आख्यान का उपब ंहण विशेष रूप से भागवत तथा विष्णु पुराण में हुआ है। इस आख्यान का मूल ऋग्वेद ८।७७।१० के अतिरिक्त तैत्तिरीय संहिता तथा शतपथ ब्राह्मण को माना जाता है।

लौकिक

(१) **पुरुरवा-उर्वशी आख्यान** - भागवत तथा विष्णु पुराण में इस आख्यान द्वारा पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय कथा का विशुद्ध साहित्यिक रूप वर्णित है। विद्वज्जन इस आख्यान का मूल ऋग्वेद के पुरुरवा उर्वशी संवाद को मानते हैं।

(२) **हरिश्चन्द्र-शुनः शेप आख्यान** - इस आख्यान में राजा हरिश्चन्द्र उसके पुत्र रोहित और ऋषि पुत्र शुनः शेप की कथा का विस्तार से वर्णन उपलब्ध होता है। यह आख्यान भागवत, दैवी भागवत, ब्रह्म तथा मार्कण्डेय पुराण में विस्तारसे वर्णित है। मार्कण्डेय पुराण में इसका वर्णन अत्यन्त साहित्यिक तथा रोचक है। यह आख्यान मूलरूप से ऐतरेय ब्राह्मण में उपलब्ध होता है।

नचिकेतोपाख्यान - मूल रूप से कठोपनिषद् का नचिकेतोपाख्यान अद्वितीय अध्यात्म साहित्य का महत्त्वपूर्ण आख्यान है। यह आख्यान ऋषि वाजक्षवस, उनके पुत्र नचिकेता तथा राम की कथा से सम्बद्ध है। पुराण साहित्य में इस आख्यान का उपब ंहण विशेष रूप से वराह पुराण में मिलता है। वहाँ इस आख्यान में समयानुसारी परिवर्तन करके रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

पुराणों में उपरिनिर्दिष्ट धार्मिक और लौकिक आख्यानों से भिन्न प्रकार के आख्यान भी उपलब्ध होते हैं। आख्यानों के इस प्रकार को प्रतीक आख्यान कहा जा सकता है। इस कोटि में-इन्द्र-अहल्या, चन्द्रमा-तारा, विश्वरूप त्वष्टा तथा ब्रह्माऔर सरस्वती के आख्यान प्रमुख हैं। विद्वानों के अनुसार इन प्रतीकोपाख्यानों के माध्यम से पुराणकारों ने आध्यात्मिक और वैज्ञानिक रहस्यों को प्रकट किया है।

पुराण में प्रतिपादित सर्ग (स ष्टि)

प्रतिसर्ग पुराणों के वर्ण्य विषय है। सर्ग को स ष्टि विद्या कहते हैं। पौराणिक स ष्टिक्रम पर सांख्य दर्शन में वर्णित स ष्टिक्रम का ही प्रभाव परिलक्षित होता है। पर, कई द ष्टियों से इसका अपना